बनास जन

विप्लव राग

सुधीर विद्यार्थी से संवाद

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

विप्लव राग

साहित्यकार सुधीर विद्यार्थी से बिपिन तिवारी, अभिषेक गुप्ता और रोहताश का संवाद

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–80 रुपये
100 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–130 रुपये
7000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
12,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सएप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और सचदेवा आफसेट प्रिंटर्स, बी-39, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात	4
विप्लव राग	5
सुधीर विद्यार्थी : परिचय एवं पुस्तकें	67
साक्षात्कारकर्ताओं का परिचय	71

अपनी बात

जगहों के इर्द गिर्द लिखना नयी बात नहीं है। इतिहास और भूगोल के अलावा साहित्य के खाने में भी इलाहाबाद और काशी जैसे शहरों पर पचासों किताबें समय-समय पर दर्ज की गई हैं जिन्हें पढ़ना पाठकों को खासा भाता रहा है। क्या किसी खास जगह या शहर के दायरे में लिखने से उस जगह का अपना कोई खास चरित्र उभरकर आता है? वहाँ के इतिहास, भूगोल के परिप्रेक्ष्य में जीवन को देखने-समझने को कोई सर्वथा नई दृष्टि मिल जाती है? सुधीर विद्यार्थी के संस्मरण लेखन से गुजरते हुए इन सवालों का उठ खड़ा होना आकस्मिक नहीं है। सुधीर विद्यार्थी हिंदी साहित्य में बनारसीदास चतुर्वेदी के बाद अकेले लेखक हैं जिन्होंने स्वतन्त्रता के लिए चले विभिन्न क्रांतिकारी आंदोलनों के सम्बन्ध में खूब लिखा। उनकी किताबें इतिहास को जानने-समझने के लिए जितनी भी महत्त्वपूर्ण हों लेकिन उनकी मूल प्रकृति साहित्य की है। इस बात का आशय यह नहीं कि इतिहास लेखन के लिए आवश्यक मानदंडों को ये पूरा नहीं करती अपितु उनकी किताबें साहित्य के रास्ते से न केवल आजादी के विभिन्न आंदोलनों के संदर्भ में हमें समझदार बनाती हैं और उनकी संवेदना इतिहास से अधिक गहरी है। अपने लेखन को जीवंत, प्रामाणिक और हृदयस्पर्शी बनाने के लिए वे अपने ऐतिहासिक चरित्रों की तलाश में जगहों, लोगों, घटनाओं और किताबों-दस्तावेजों तक जाते हैं। उनकी किताबें 'पहचान बीसलपुर' (2000), 'मेरे हिस्से का शहर' (2008), 'शहर के भीतर शहर' (2012), 'बरेली एक कोलाज' (2015) और 'फतेहगढ़ डायरी' (2015) पढ़ना कथेतर विधा के नए और अनजाने इलाकों में जाकर समृद्ध होना है। इस लेखन का महत्त्व इस दृष्टि से भी समझना चाहिए कि विभिन्न संस्कृतियों और बहुलताओं से भरे हमारे देश का साहित्य भी एकरेखीय नहीं हो सकता। यहाँ के लोगों को ठीक तरह से जानने के लिए यहाँ के अलग-अलग इलाकों के इतिहास, संस्कृति और भूगोल को भी देखना-जानना पड़ेगा, उसके लिए सुधीर विद्यार्थी कथेतर का रास्ता गढ़ते हैं जिस पर भरोसा किया जा सकता है। फिर पूछा जाए कि दुनिया भर के महान इतिहास के समक्ष बीसलपुर या पीलीभीत को देखने-पढ़ने का क्या औचित्य है? असल में ऐसे सवाल भूमंडलीकरण के बाद लोकप्रिय हुई उस समझ का प्रमाण हैं जिसमें दुनिया को एक गाँव मानने का आग्रह करते हुए अपने गाँव को भूल जाने का कोई खेद नहीं होता।

इसके अलावा सुधीर जी ने क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े महान स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित विभिन्न दस्तावेजों, जीवनियों और इतिहास पुस्तकों को भी जमा किया उन्हें परिवर्धित कर नयी पीढ़ी के लिए सुलभ किया। किताबी कामों के साथ उन्होंने सेनानियों की स्मृति सहेजने के लिए अनेक जमीनी काम भी किए जिनमें स्मारकों का निर्माण और सेनानियों के नाम पर जगहों का नामकरण करवाना शामिल है।

बनास जन के लिए संतोष की बात है कि युवा शिक्षक और अध्येता बिपिन तिवारी ने अपने दो शोधार्थियों अभिषेक गुप्ता और रोहतास कुमार के साथ मिलकर विद्यार्थी जी से लम्बा संवाद किया। यह संवाद केवल विद्यार्थी जी के कृतित्व की झाँकी ही नहीं है बल्कि हमारे समय और समाज से लगातार ओझल होते जा रहे राष्ट्रीय मूल्यों की याद भी दिलाता है जिनसे हमें औपनिवेशिक साम्राज्यवाद से मुक्ति मिली। इस संवाद में अपनी विरासत से बढ़ती अनभिज्ञता के प्रति गहरी बेचैनी और तड़प देखी जा सकती है।

आशा है पाठकों को यह संवाद पसंद आएगा।

पल्लव

विप्लव राग

साहित्यकार सुधीर विद्यार्थी से बिपिन तिवारी, अभिषेक गुप्ता और रोहताश का संवाद

विद्यार्थी जी, जब आाप लेखन की दुनिया में सक्रिय हुए तो वे कौन-सी बेचैनियाँ थीं जिन्हें आप अभिव्यक्त करना चाहते थे?

लेखन की दुनिया में मेरी प्रविष्टि कैसे हुई, इसे मैं स्वयं भी बहुत अच्छे ढंग से व्याख्यायित नहीं कर सकता। मुझे लगता है कि कुछ चीजें सरल रेखा की तरह नहीं होतीं बल्कि जटिल और उलझी हुई होती हैं। कई बार हमें खुद भी पता नहीं होता है कि हम कहाँ से गुजर रहे हैं और क्या होने वाला है। स्नातक की पढ़ाई के लिए मैं गाँव से शहर गया। मैं विज्ञान का विद्यार्थी था यद्यपि उसमें मेरी रुचि नहीं थी। लेखन की दुनिया में बहुत सोच-समझकर प्रवेश नहीं किया था। ईमानदारी से कहूँ तो सिर्फ यह था कि अपने नाम को छपे हुए शब्दों में देखने की एक ललक पैदा हुई थी। जैसा कि प्रारंभ में होता है, कुछ कविताई से शुरू किया। कविता भी क्या, तुकबंदी का प्रयास ही अधिक था। एक दो-साल तक यह चलता रहा। इस दौरान कुछ देशभक्ति की कविताएँ लिखीं। उसके बाद कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं कि पढ़ाई छोड़कर गाँव चला आया। गाँव में खेती करने लगा लेकिन वहाँ भी कुछ ऐसी घटनाएँ हो गयीं कि फिर शहर लौटना पड़ा।

एक घटना आपको बताऊँ जिसने मेरे जीवन को बड़ा प्रभावित किया। गाँव में मैं एक दिन खेत जोत रहा था। मेरे पास भैंसे का हल था। बड़े से खेत में हमारे दो नौकर भी बैलों के हल से खेत जोत रहे थे। दोपहर हो चली थी। काली त्वचा होने के कारण भैंसा धूप को बहुत मानता है। खेती करने का नया-नया जोश था, तो सोचा कि जो थोड़ा सा खेत रह गया है, जिसे गाँव में हम हरैया बोलते हैं, इसको भी निकाल दें। पिता मना करते रहे लेकिन मुझे जिद थी कि मैं इसको पूरा करके जाऊँगा। भैंसे जब हाँफने लगे तो मैंने दो-तीन डंडे, जिसे गाँव में पैना कहते हैं, उनको मारे। भैंसे में इतनी ताकत होती है कि अगर वो बिगड़ जाए तो नाथ से नहीं रुक सकता और खास तौर पर गर्मी खाया हुआ भैंसा बिल्कुल नहीं। बैल को आप रोक सकते हैं क्योंकि बैल की त्वचा पर धूप का उतना असर नहीं होता जितना भैंसे पर होता है। भैंसे भागने लगे, बहुत रोकने का प्रयास किया, काफी दूर तक उनके साथ भागे लेकिन अंत में एक बड़ी सी मेड़ पार करने को भैंसे कूदे तो हल एक भैंसे के पैर में लग गया और खून निकल आया। मैंने मिट्टी उठाकर घाव में मल दी। पिता दूर खड़े यह सब देख रहे थे। वे वहीं से डाँटने लगे। पहले तो कुछ और कहते रहे लेकिन अंत में उन्होंने कहा कि बरसात में अगर इसका पैर पक गया तो नया भैंसा कहाँ से लाऊँगा और अगर एक हल कम हो जाएगा तो खेती कैसे होगी। तीन हल की खेती थी। पहले खेती की नाप-जोख हलों से होती थी। अंत में उन्होंने कहा कि निकल जाओ हमारे खेत से। मेरा स्वभाव शुरू से ही जिद्दी था। इसके फायदे और नुकसान दोनों हुए। हालांकि फायदे ज्यादा मिले। महेश अनघ की गजल का एक शेर है कि--

रास्ते जितने बने, जिद ने बनाये हैं
लीक तो आखिर बुजुर्गों की वसीयत है
एक अदना आदमी भी बहुत कर लेता
ऐन मौके पर अड़ी अफसोस इज्जत है।

बस हल को वहीं छोड़ दिया। घर आए, साइकिल उठाई। एक झोले में अपनी डिग्री तथा अन्य दस्तावेज रखे और शाहजहाँपुर की ओर चल दिए। अम्मा घर में मजदूरों के लिए चबेना बना रही थीं। उन्हें मालूम था कि यह रुकेगा नहीं तो जल्दी-जल्दी उन्होंने दो पराँठे, धनिए की चटनी के साथ झोले

में डाल दिए। मेरी जेब में एक भी पैसा नहीं था। गाँव से शाहजहाँपुर तक की इतनी लंबी यात्रा में यदि साइकिल पंक्चर हो गई होती तो हम ठीक भी न करवा पाते। हाँ, यह ध्यान था कि एक दिन पहले अस्सी रुपये का गन्ना बैलगाड़ी से क्रेशर पर डाल आए थे। उसकी पर्ची जेब में पड़ी थी। अब शहर आ गए। वहाँ पता किया कि नौकरी किस तरह से मिलेगी। परिचित लोग हँसते थे क्योंकि हमारा एक ही सपना था कि नौकरी कभी नहीं करेंगे, राजनीति करेंगे। आजीविका के लिए खेती करेंगे। शाहजहाँपुर में पता चला कि दो जगह आवेदन हो रहे हैं। जजी में (यानी कोर्ट में) और ग्राम सेवक के लिए, जो बाद में ग्राम विकास अधिकारी हो गया। हमने दोनों जगह आवेदन कर दिया। दोनों जगह चयन भी हो गया। पैसे की जरूरत पड़ी तो अगले दिन मैं फिर साइकिल से आकर वो अस्सी रुपये क्रेशर से ले गया और उससे अपना काम चलाया। फिर मैं जब गाँव लौटा तो खेती करने का इरादा तो छोड़ ही चुका था और नौकरी शुरू हो गयी थी।

साहित्य की दुनिया में मैं कभी उपेक्षित नहीं रहा। उसका कारण है कि मैंने जो कुछ भी लिखा बहुत ईमानदारी एवं समर्पित भावना के साथ। मेरी रचनाओं का अपेक्षित मूल्यांकन भी हुआ। लेकिन नौकरी शुरू करने के बाद जब घर लौटा तो एक दिन पिता ने एक पंक्ति में मेरा जो मूल्यांकन कर दिया था, वह बहुत सही सिद्ध हुआ। दो दिन की छुट्टी पर घर आया था, जब वापस जाने लगा तब पिता घर से बाहर आए। पिता को मैंने जीवन में दूसरी बार रोते देखा। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और कंधे पर सिर रखकर रोने लगे। बोले, ''नौकरी छोड़ दो यहाँ खेती-किसानी सब चौपट हो रही है।'' आगे जो उन्होंने बात कही वो बड़ी याद आती है। उन्होंने कहा, ''तुम नौकरी नहीं कर पाओगे।'' मैं एक-डेढ़ घंटे रुका रहा। फिर सोचकर कहा कि अभी जाता हूँ, बाद में छोड़ दूँगा। शहर आकर बहुत सोचता रहा। सोचा कि मुझे लेखन की दुनिया में आना है और गाँव में रहकर तो यह हो नहीं सकता। इसलिए नौकरी करना मैंने जारी रखा और गाँव आने से इनकार कर दिया। उसी समय क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास से जुड़ी सामग्री तक पहुँच बननी आरंभ हुई। एक दिन पान की दुकान पर अम्मा के लिए पान और तम्बाकू लेने गया था। वहाँ एक अखबार में मैंने किसी क्रांतिकारी का एक चित्र देखा। चित्र के नीचे छपा था कि यह उस समय का चित्र है जब वह क्रांतिकारियों की ओर से चलाई जा रही आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों के खिलाफ बम फेंकने की योजनाओं में व्यस्त रहा करते थे। ऐसा कुछ छपा था। छात्र जीवन था। किसी भी नवयुवक की तरह मुझे भी बम के प्रति एक आकर्षण महसूस हुआ। वहाँ से मन में यह जानने की इच्छा पैदा हुई कि क्रांतिकारी कौन थे। पिताजी कभी-कभी कुछ कहानियाँ सुनाया करते थे। हालांकि पिताजी से मेरा कम ही संवाद होता था। मैं मन में भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद के बारे में कल्पना किया करता था कि ये कितने लंबे चौड़े होंगे, मनुष्य से इतर होंगे और आठ-दस फीट के मतलब बहुत बलवान टाइप के होंगे। सत्रह साल की उम्र रही होगी, तब यह इच्छा जगी कि इन क्रांतिकारियों के कुछ साथी, जो जीवित हैं, उनको देखा जाए। वे भी उनके जैसे होंगे। तो उन क्रांतिकारियों से मिलने का रास्ता कैसे निकाला जाए। इस काम में हमारे मददगार बने शाहजहाँपुर के स्वतंत्रता सेनानी श्याम सिंह बागी। उन्होंने 1942 के आंदोलन में भाग लिया था और कम्युनिस्ट पार्टी के डांगे गुट से जुड़े थे। वे 'साथी' नामक एक अखबार निकाला करते थे, जो कम्युनिस्ट विचारों और क्रांतिकारी शहीदों के लिए बड़ा प्रतिबद्ध था। उनसे मुझे यह सब जानकारी मिली कि कैसे खबर लिखी जाती है, प्रूफ कैसे देखा जाता है, आकर्षक ढंग से शीर्षक कैसे लगाया जाए जो पाठक का ध्यान खींचे। बाद में जब क्रांतिकारियों से मिलना हुआ तो देखा कि वे लोग तो हमारे आप जैसे थे। बेहद सरल, विनम्र और भावुक। धीरे-धीरे क्रांतिकारी आंदोलन की विरासत को जानने और उस पर लिखने का सिलसिला चल पड़ा।

अब तक मैंने क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास पर काफी काम किया है यद्यपि वह इतिहास जैसा